19वीं शताब्दी के ख्याल रचनाकारों की मौलिक कृष्ण भक्ति रचनायें

Jyoti Sharma
Research Scholar, Department of Music, Panjab University Chandigarh

प्रत्येक काल में भगवान श्री कृष्ण का संगीत से अटूट संबंध रहा है। संगीत की कोई भी विधा हो या यूं कह लीजिए कोई भी गायन शैली कृष्ण से वंचित नहीं है अर्थात भगवान श्री कृष्ण गायन की विभिन्न शैलियों से संबंधित हैं जैसे प्राचीन काल में स्तोत्र गान, मध्यकाल में ध्रुवपद, भजन–कीर्तन तथा आधुनिक काल में विभिन्न कलाकारों ने भक्त कवियों की रचनाओं को सुंदर स्वरावलि में बांधकर प्रयोग किया है।

आधुनिक काल में ख्याल गायकों ने भक्त कवियों की कृष्ण परक रचनाओं को अपनाया तथा गाया। भारतीय संगीत में ख्याल गायकों ने कृष्ण परक रचनाओं को विभिन्न रागों के अन्तर्गत स्वर एवं तालबद्ध करते हुए जन साधारण में प्रचार–प्रसार किया।

वैदिक काल से आधुनिक काल तक विभिन्न कवियों तथा ख्याल गायकों ने मुरलीधर श्रीकृष्ण से संबंधित साहित्य की रचना की है। इन ख्याल रचनाकारों का कालक्रमानुसार तीन शताब्दियों ;18वीं, 19वीं तथा 20वींद्ध में विभक्त किया गया है। 18वीं शताब्दी के उन रचनाकारों की कृष्ण–भक्ति रचनाओं को लिया है जो कि ख्याल शैली के जन्मदाता माने जाते है। आज भी इन रचनाकारों की रचनाओं का गायन सुनने को मिलता है जैसे– अदारंग, सदारंग, मनरंग आदि।[1]

गायकों के मुख्य पांच घराने हैं:–

1. ग्वालियर घराना
2. जयपुर घराना
3. किराना घराना
4. आगरा घराना
5. दिल्ली घराना

ग्वालियर घराने के पं. ओंकारनाथ ठाकुर, बालकृष्ण बुआ उमेडकर, प. नारायण लक्ष्ण गुणै, कृष्ण नारायण रातंजनकर, कुमार गंधर्व, जयपुर घराने के भूपत खाँ (मनरंग), मुहम्मद अली खाँ, अल्लादिया खाँ अल्लादिया घराने के प्रवर्तक है जो बाद में जयपुर घराने के नाम से प्रसिद्ध हुए, किशोरी अमोनकर।

आगरा घराने के तस्सदुक हुसैन, सरसरंग, गुलामकादर खाँ, विलायत हुसैन खाँ तथा फयाज़ हुसैन खाँ। दिल्ली घराने के मियां अचपल, कुतुबवख्श तथा किराना घराने के खाँ साहब मुहमद हुसैन खाँ। अतरौली घराने के महबूब खाँ, अजमत हुसैन खाँ, खुर्जा घराने के जहूर खाँ, भिण्डी बाजार घराने के अमान अली खाँ, मथुरा घराने के काले खाँ तथा बड़े गुलाम अली खाँ पटियाले वालों की ख्याल–कृष्ण भक्ति रचनाओं का उल्लेख किया है।

19 वीं शताब्दी के ख्याल रचनाकार

नाम	उपनाम	घराना	समय
मुहम्मद अली खाँ	हररंग	जयपुर घराना	1825 से 1905
पं. विष्णु नारायण भातखण्डे	चतुर	रामपुर घराना	1860 से 1936

1 शर्मा सत्यवती, ख्याल गायन शैली विकसित आयाम– पृ.131

पं. ओकासाथ ठाकुर	प्रणवंरग	ग्वालियर घराना	1897 से 1967
कृष्ण नारायण रातंजनकर	सुजान	ग्वालियर घराना तथा आगरा घराना	1900 से 1974
तस्सैद्धक हुसैन खाँ	विनोद	आगरा घराना	1879
विलायत हुसैन खाँ	प्राणपिया	आगरा घराना	1896 से 1962
फटयाज हुसैन खाँ	प्रेमपिया	आगरा घराना	1880 से 1950
जहूर खाँ	रामदास	खुर्जा घराना	1800 से 1900 लगभग
गुलाम कादर खाँ	सनेही	आगरा घराना	1900 से 1970
उ. काले खाँ	सरसपिया	मथुरा घराना	1860 से 1926
महबूब खाँ	दरस	अतरौली घराना	1800 से 1900
अब्बन खाँ	अब्बन खाँ	सहारनपुर घराना	मृत्यु 1922
अमान अली खाँ	अमर	भिण्डी बाजार घराना	1884 से 1953
अनबर हुसैन खाँ	रसरंग	आगरा घराना	19वीं श. के अन्त में
उ. अल्लादिया खाँ	अहमद पिया'	जयपुर घराना	1855 से 1946

मुहम्मद अली खाँ 'हररंग'

इनको लोग मुहम्मद अली खाँ फतहपुर के नाम से भी जानते थे। इनका सारा परिवार जयपुर में ही रहता था और लोग इन्हें जयपुर का निवासी मानते थे। इनको अपने घराने के बड़े–बूढ़ो से संगीत की शिक्षा प्राप्त हुई और इनके पास बंदिशों का बड़ा अच्छा संग्रह था, जिनमें गायकी के तरह तरह के नक्शे मिलते थे। संगीत के सुप्रसिद्ध विद्वान भातखंडे जी भी इनके शिष्य बन गए थे। उन्होंने इनकी कुछ रचनाओं की स्वरलिपि भी की थी। इनको हररंग की उपधि मिली थी। इनके घराने को हम जयपुर का प्रमुख ख्याल घराना मानते हैं। इनके पुत्र आशिक अली खाँ अपने घराने के प्रतिष्ठित गायक थे। इनकी कृष्ण भक्ति रचना इस प्रकार हैं:–

राग– विभास, तीनताल (मध्यलय)

स्थाई:– प्यारी प्यारी बतियां कर कर
मोहन आली री मेरो मन बस कीनो।

अंतरा:– घरीपल मूरति टरत न हियतें
हर रंग बेगि दिखावो सुरतिया।1

राग–ललित, तीनताल (म)

स्थाई:– बलि बलि जाऊं मुखारबिंदु के
सुंदर की छवि मोरि मन बस गइ
का कहुं अपने आनंद को

अंतरा:– मोर मुकुट मकरा कृत कुंडल
गल वैजंती सोहत माल शंख चक्र गदा

1 भा.वि. ना क्र .पु. मा. भा. 5. पृ. 392

और पदम सन हररंग ललित सरूप आपार।1

राग–श्रीटंक, तीनताल (म)

स्थाईः– हरि हरि कर मन जग में
जीवन है दिन चार।
अंतराः– गुमाइ परिपाछे न हि आवे
हररंग कर ले विचार।।2

पं विष्णु नारायण भातखण्डे

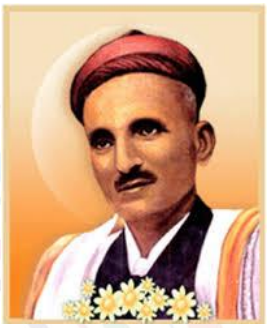

इनका जन्म 10 अगस्त 1860 ई. को हुआ। अपनी किशोरावस्था में भातखण्डे जी रामपुर परम्परा के गुणियों के शिष्य हो चुके थे। गीत रचना की दिशा में भातखण्डे जी ने कुछ किया है वह उसकी बहुमुखी संगीत सेवा का एक सदृढ़ स्तम्भ है। कवि का भावुक हृदय उन्होंने स्वभावतः पाया था।[3] चतुर नामभिधान से उन्होंने सिद्धांत ग्रंथों की रचना की जिसका वे गीत रचना में भी उपयोग करते रहे। उदाहणार्थ उनकी ख्याल–कृष्ण–भक्ति– रचनाएँ इस प्रकार हैः

राग–तोड़ी, तीनताल (म)

स्थाईः– कान्ह करत मोसे रार एरि माई,
अब ही जाय कहूं यसोदा घर,
लंगर झगर मोरि गगरि दिनि डार
अंतरा– मै दधि बेचन जात बिंद्रावन आन,
अचानक तुमरो बार बार घाट में रोकत टोकत
अपने चतुर को लीजे संभार।।4

राग–मारवा, एकताल (म)

स्थाईः– चलो हटो गिरधारी श्याम,
नइ सी चुनरि मोरी बिगरत
हाँ–हाँ करत पाँच परत,
कर पकरत कछु ना डरत।
अंतरा– बाट चलत अचरा गहत,
मटकी सरसों ढुरकत जाय
कहों घर को अब,
हटो हटो अब चतुर श्याम।।5

1 भा.वि. ना क्र .पु. मा. भा.4, पृ.494
2 भा.वि. ना क्र .पु. मा. भा. 5, पृ.390
3 भातखण्डे–संगीत शास्त्र, भा. 4. पृ. 224
4 पं. विष्णु नारायण भातखण्डे, क्र. पु. मा. भा. 2. पृ. 436
5 पं. विष्णु नारायण भातखण्डे, क्र. पु. मा. भा. 2. पृ. 294

पं. ओंकारनाथ ठाकुर ''प्रणवरंग''

पं. ओंकारनाथ ठाकुर विष्णु दिगम्बर के परम यशस्वी शिष्य थे। यह बचपन से ही अपने गुरु की सेवा में लगे और बहुत परिश्रम करके उनसे संगीत विद्या सीखी। इन्होंने अपना उपनाम ''प्रणवरंग'' रखा था और वह इस नाम से अनेक छन्दो में काव्य रचना करके विभिन्न रागों में बैठा गये हैं। उनकी ''संगीतांजलि'' नाम की ग्रंथमाला अवलोकन करने पर अनेकों पद उनके द्वारा रचित मिलते हैं जिनमें ''प्रणव'' तथा ''प्रणवरंग'' शब्द से इंगित हैं। उनकी ख्याल–कृष्ण भक्ति रचना इस प्रकार हैः–

राग–भैरवी, तीनताल (म)

स्थाई– नजरिया लागी रे गुइयाँ, बंसीवट अरू तट जमुना के
श्याम सुंदर रस पागी रे।

अंतराः– वह चितवन मुसकान माधुर, लख मन भयो विरागी।
''प्रणवरंग'' मोहे कल न परत है, लोक लाज भागी रे।।1

राग–देस, तीनताल (म)

स्थाईः– पार लगादे रे मोरी नैया,परूँ तोरे पैयां कुंवर कन्हैया।

अंतराः– तुम सब जग के रख वैया, भव सागर पार करैया
तुमही ''प्रणव'' पितु मैया।। 2

श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर ''सुजान''

इनका जन्म 31 दिसम्बर 1900 ई. को बम्बई में हुआ। इनके प्रारम्भिक संगीत गुरु कृष्ण भट्ट थे। रातंजनकर जी स्वयं भातखण्डे जी के पटशिष्य थे। इसीलिए वे मैरिस कॉलेज लखनऊ के प्रिंसीपल दीर्घकाल तक रहे। अनंत मनोहर जोशी और फैयाज़ खाँ से भी रातंजनकर जी ने सीखा। आगरा घराने के इस गायक ने बहुत सी चीजें अपनी बनाई और उन्हें भिन्न भिन्न रागों में बैठाया है। बदिशों में इन्होंने अपना नाम ''सुजान'' दिया है। इनकी ख्याल–कृष्ण भक्ति रचना इस प्रकार हैः

राग–रामदासी मल्हार, तीनताल (म)

स्थाईः– माधो मुकुंद गिरिधर गोपाल,
क्रेष्ण मुरारी मधुसूदन माधो मुकुंद।

अंतराः– जपत अनंत हरे नाम,
पावे आनंद अत '' सुजाना'' माधो मुकुद।3

---

1 ठाकुर, ओंकारनाथ, सं. अं. भा. 2, पृ.191
2 ठाकुर, ओंकारनाथ, सं. अं. भा. 1. पृ. 91
3 अभिवन गीत मंजरी, भा–2, ;उत्तरार्द्व रातंजनकरद्ध , पृ.77

राग– केदार, तीनताल (म)

स्थाईः– चन्द्र लज्यो मुख देखि,
दृगन द्यृति निहरि लज्यो
भान धन नील बरन,
नभ लज्यो देखि नटवर कै

अंतरा :– मुखविलास मुस्कान देखि पनि,
लक्ष्मी ब्रिज गोपि लजी सब।
मुरलि नाद सुनि साम लज्यो भयो,
लीन ''सजन'' हरि चरण कंवल के।।1

विलायत हुसैन खाँ ''प्राणपिया''

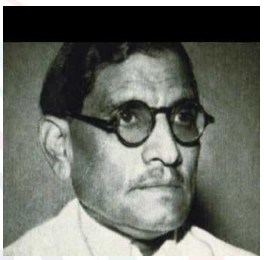

आगरा घराने के गायक विलायत हुसैन खाँ ने पिता नत्थन खाँ से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रारंभिक शिक्षण प्राप्त किया, तब वे केवल छः वर्ष के थे। जयपुर के खाँ मुहम्मद बख्श ने इनको दत्तक लिया और विलायत खाँ की शुरू की तालीम उन्हीं से हुई। करामत खाँ ने विलायत खाँ को आलाप और ध्रुपद–धमार सिखाया। अपने पिता की मृत्यु के बाद, उन्होंने अपने चाचा कल्लन खाँ और मोहम्मद बख्श द्वारा भी अस्थाई ख्याल गायन शैली की तालीम पाई। बीस वर्ष की उम्र में वह जगह–जगह जाने लगे और धीरे–धीरे अपनी विद्वत्ता और खानदानी गायकी के ढंग से संगीतज्ञों को प्रभावित करने लगे। विद्यादान में वे बहुत उदार रहें और अपने शिष्यों को बड़े दिल से सिखाया। उन्हें फैयाज़ खाँ द्वारा भी प्रशिक्षित किया गया था। आगरा घराने की मान–प्रतिष्ण और विस्तार उन्हीं से बहुत बढ़ा। ब्रजभाषा में ''प्राणपिया'' नाम से रागदारी

मग में रसरंग पकरत करवा की कई चीजों की रचना की है।[2] इनकी ख्याल कृष्ण भक्ति रचनाएँ निम्नलिखित हैः–

राग–सावनी, तीनताल

स्थाईः– आज मग जोवत हारी,
आली मोरी अखियां दरस की प्यासी।

अंतराः– प्राणपिया बिन चैन न आवत,
आये न मोरे ग्राम बनवारी।।3

राग–लंका दहन सारंग तीनताल

स्थाईः– शरण तक आई लाज मोरी राखो
राखो मोहे चरण शरण सांवरा।

अंतराः– ''प्राणपिया'' अब बेगि सुध लीजै
आन परी अब मौपे कठिन आपदा।।1

1 अभिनव, गीत मंजरी, भा. 2. पृ. 07
2 शर्मा सत्यवती, ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ.150
3 वही।

फैयाज़ हुसैन खाँ ''प्रेम पिया''

यह सफदर हुसैन खाँ के सुपुत्र और मुहम्मद अली खाँ सिंकन्दराबाद वाले के पोते थे। यह रमजान खाँ रंगीले की परम्परा के हैं। फैयाज खाँ बचपन से ही अपने बाबा गुलाम अब्बास खाँ के पास आगरे में रहते थे और उन्हीं से संगीत की शिक्षा भी पाई। इनके चाचा फिदा हुसैन खाँ कोटावालों से आपको संगीत शिक्षा प्राप्त हुई। इन्होंने बहुत ही योग्य तथा प्रसिद्ध शिष्य तैयार किये जिनमें दिलीपचंद्र बेदी, एस. एस रातंजनकर आदि। स्वर्गीय सहगल भी इन्हें अपना उस्ताद मानते थे। संगीत के साथ साथ कविता का भी आपकी रुचि थी। लगभग दो सौ, ढाई सौ चीजों की बंदिशें आपने ''प्रेम प्रिया'' उपनाम से रची। इनकी ख्याल कृष्ण भक्ति की रचना उदाहरण निम्न हैः–

राग–सुघराई, तीनताल (म)

स्थाई– नैनन सों देखी मैने एक मोहन की।

अंतरा– जबतें प्रेम मोहे उनको भयो है,
सुध ना रही तनमन की।2

उस्ताद जहूर खाँ ''रामदास''

जहूर खाँ गुलाम हुसैन खाँ के बड़े बेटे थे। यह खुर्जा घराने के सबसे प्रसिद्ध गायक माने गये है। आधुनिक युग में जहूर खाँ ही अपने घराने के अद्वितीय गायक माने जाते है और इनका बड़ा नाम था। जहूर खाँ दिल्ली के मशहूर गायक तानरस खाँ घराने से भी सम्बधित थे और उनकी शिष्य परम्परा से भी सम्बंधित थे। यह बड़े विद्वान थे और हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और फारसी चारों भाषाओं में कविता करते थे। हिन्दी और संस्कृत कविता में इनका उपनाम ''रामदास'' और उर्दू–फारसी में मुंमकिन'' तखल्लुस था। संगीत–शिक्षा इन्हें विरासत में ही मिली। इनके बनाए हुए ध्रुपद–धमार, सादरे, अस्थाई–ख्याल आदि अभी तक मौजूद है।[3] इनकी ख्याल कृष्ण भक्ति रचना इस प्रकार हैः–

राग तोड़ी, एकताल (मध्यलय)

स्थाईः– निपट नट कठोरी रे श्याम सुंदर
तुम हमतें करत निठुराई।।

अंतराः– रामदास की एकहु न मानत
अंग अंग तोहे देत बुराई।।4

काले खाँ ''सरसपिया''

काले खाँ गुलदीन खाँ के सुपुत्र थे और इनका जन्म मथुरा में 1860 में हुआ था। यहां लोग इन्हें ''सरसपिया'' के नाम से जानते है और इसी उपनाम से इन्होंने बहुत सी बेजोड़ बंदिशों की रचना की थी। श्रोतागण ''सरसपिया'' से इसलिये भी परिचित है कि इनकी राग परज की रचना ''मन मोहन ब्रज

1 झा. रा. आ. अ. गि. भा,3 पृ.184
2 मेहता रमणलाल, आगरा घराना परम्परा गायकी और चीजे़, पृ. 149
3 शर्मा सत्यवती, ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ. 153
4 खाँ विलायत हुसैन, संगीतज्ञों के सस्मरण, पृ. 231

को रसिया को उस्ताद फैयाज खाँ ने ग्रोमोफोन रिकार्ड में गाकर अमर बना दिया है। काले खाँ को अपने पिता से ही संगीत की शिक्षा मिली थी। इनकों सितार वादन की शिक्षा भी अपने पिता से ही मिली थी और ये सितार वादन में निपुण भी थे। इनके रचे ख्याल, ठुमरी आज भी सुनने को मिलते है। ''सरसपिया'' के नाम से लोग इन्हें आज भी याद करते है। इन की ख्याल कृष्ण भक्ति रचनाः–

राग बिहाग, तीनताल (मध्यलय)

स्थाईः– बंसी कैसी बजी नंद लाला, तुमरी जमुना के घाट।
धुन मन में मोरे बसी, सुन सुध बुध बिसरानी।।

अंतराः– जग निस्तारन भक्त निवारन,
ब्रज की भूमि पर ''सरस'' जन्म लीनो।
कालिदे में नाथो तुम नाग सो प्रानी।1

राग परज, तीनताल (मध्यलय)

स्थाईः– मुरली बजाय मेरो मन मोह लेत
मन मोहन ब्रज के रसिया
जात हती मै तो ब्रज की गलीयां

अंतरा– देखी ''सरस'' सांवरी सूरत
ललच रहयों है मेरा जिया
सुन धुन दिल बिचलाग रही बेकलिया।।2

महबूब खाँ ''दरस पिया''

खुर्जा और सहसवान की तरह अतरौली भी एक छोटी सी जगह है और अलीगढ़ से कुछ ही दूर है। यह ''दरस पिया'' से जाने जाते है। उनकी बहुत ही सुंदर रचनाएँ इतनी प्रसिद्ध हैं कि गायक आज भी गाते है। महबूब खाँ ''दरस'' एक योग्य और अनुभवशील गायक थे। इनकी ख्याल कृष्ण भक्ति रचनाएँ का उदाहरण इस प्रकार हैः–

राग–रागेश्री, तीनताल (मध्यलय)

स्थाईः– आयो अत मतवारो सांवरो
भोरही हमही संग रैन बिलमायो।

अंतराः– अलसानी अखियां पहचानी ''दरसपिया''
तोहे जानत हूँ बीती सागरी रैन चैन नाहि पायो।।3

अनवर हुसैन खाँ ''खुमार नियाजी''

यह अलताफ हुसैन खाँ के मंझले बेटे थे। इन्हें भी संगीत की शिक्षा जयपुर में कल्लन खाँ से मिली। उस्ताद की मृत्यु के बाद यह बम्बई चले आए और वर्षों अपने बड़े भाई खादिम हुसैन खाँ और मामा विलायत हुसैन खाँ से बहुत कुछ सीखा। इन्होंने बम्बई में कई शार्गिद तैयार किये हैं। यह कवि भी हैं और हिन्दी उर्दू में कविता लिखते थे। कविता में इनके गुरु सीमाब अकबराबादी थे और उर्दू में इनका नाम ''खुमार नियाजी'' तथा हिन्दी में ''रसरंग'' है। इनकी ख्याल कृष्ण रचना इस प्रकार हैः

1 खाँ विलायत हुसैन, संगीतजों को संस्मरण, पृ.235
2 खाँ विलायत हुसैन, संगीतजों को संस्मरण पृ. 238
3 झा रामाश्रय, अ. गि. भा 2, पृ. 235

राग–गुर्जरी तोड़ी, तीनताल (मध्यलय)

स्थाई– अब घर जाने दे श्याम मोहे।

अंतरा– परी बानि तोहे ढोठ लंगरवा
ये हो नन्द दुलारे।।1

उपरोक्त तथ्य के अध्ययन से यह विद्वित होता है कि वैदिक काल से आधुनिक काल तक कृष्ण परक साहित्य एवं संगीत का विपुल भंडार रहा है एवं न केवल साहित्य के रुप में तथापि जन साधारण में भी अधिक प्रचलित रहा। इस स्पष्ट है कि किसी समय रचना की कौन सी गायन शैली प्रधान रही जिसके अन्तर्गत बंदिश की अपनी विशेषताएं परिलिक्षित होती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

शर्मा अनीता, प्राचीन सांगीतिक परम्पराएँ एवं ध्रुपद शैली एक अध्ययन, संजन प्रकाशन, दिल्ली, 2004

शर्मा सुनीता, भारतीय संगीत का इतिहास (आध्यात्मिक एवं दार्शनिक), संजय प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1996

शर्मा सत्यवती, ख्याल गायन शैली विकसित आयाम पंचशील प्रकाशन फिल्म कालोनी जयपुर 302003, संस्करण 1994

पाण्डे अमिता, ख्याल गायकी और भक्ति रस, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2014

झा रामाश्रय, अभिनव गीतांजलि, भाग 1–5, संगीत सदन प्रकाशन 88, साऊथ मलाका, इलाहाबाद 2004, 2006, 2006, 2007, 2009

पं. ठाकुर ओंकरनाथ, संगीतांजलि भाग–1–6 पं. ओंकारानाथ ठाकुर मेमोरियल ट्रस्ट वालकेश्वर रोड, मुम्बई, 1959

भातखण्डे विष्णु नारायण, क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1–6, संगीत कार्यालय हाथरस, 1964, 1969, 1984, 1970, 1979, 1999, 2000

खाँ विलायत हुसैन, संगीतज्ञों के संस्मरण प्रकाशक संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली, 1959

भातखण्डे विष्णु नारायण, भातखण्डे संगीत शास्त्र, संगीत कार्यालय हाथरस, 1956

1 झा रामाश्रय, अ. गि. भा 1. पृ. 202